CHOWK DARS (HINDI)

DAWAT-E-ISLAMI

ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी कामों में से पांचवां मदनी काम

चौक दर्स

पेशकश : मर्कज़ी मजलिसे शूरा

(दा'वते इस्लामी)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه दामत बरकातुहुमुल आलिया **दीनी किताब** या **इस्लामी सबक़** पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई **दुआ** पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه इन शाअल्लाह عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे **याद रहेगा**। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े ख़ोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले !

(المُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکربیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक-एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** सब से ज़ियादा **ह़सरत** क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में **इल्म ह़ासिल** करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने **इल्म ह़ासिल किया** और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस **इल्म** पर अ़मल न किया)

(تاریخ دمشق لابن عساکر، ج ۵۱ ص ۱۳۸ دار الفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

*किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।*

www.dawateislami.net

मजलिसे तराजिम (हिन्दी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عزوجل **दा'वते इस्लामी** की मजलिस **"अल मदीनतुल इल्मिय्या"** ने येह रिसाला **"चौक दर्स"** उर्दू ज़बान में पेश किया है और **मजलिसे तराजिम** ने इस रिसाले का **हिन्दी रस्मुल ख़त़** करने की सआ़दत ह़ासिल की है [**भाषांतर** (*Translation*) नहीं बल्कि सिर्फ़ **लीपियांतर** (*Transliteration*) या'नी बोली तो **उर्दू** ही है जब कि लीपि **हिन्दी** की गई है] और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है। इस रिसाले में अगर किसी जगह **ग़लत़ी** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए ***Sms***, ***E-mail*** या ***Whats App*** ब शुमूल सफ़ह़ा व सत़र नम्बर) **मुत्त़लअ़** फ़रमा कर सवाबे आख़िरत कमाइये।

मदनी इल्तिजा : इस्लामी बहनें डायरेक्ट राबित़ा न फ़रमाएं। . . .

राबित़ा :- मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, नागर वाड़ा, बरोडा, गुजरात (अल हिन्द) ☎ 9327776311
E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ी = ئ	ु = ؤ	आ = آ	य = ی	ह = ھ	व = و	न = ن

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

चौक दर्स

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 660 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब गुलदस्तए दुरूदो सलाम सफ़ह़ा 317 पर है : क़ियामत के दिन किसी मुसलमान की नेकियां मीज़ान (या'नी तराज़ू) में हल्की हो जाएंगी तो सरवरे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक पर्चा अपने पास से निकाल कर नेकियों के पलड़े में रख देंगे तो इस से नेकियों का पलड़ा वज़्नी हो जाएगा। वोह अ़र्ज़ करेगा : मेरे मां बाप आप पर क़ुरबान ! आप कौन हैं ? हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाएंगे : मैं तेरा नबी मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) हूं और **येह तेरा वोह दुरूदे पाक है जो तू ने मुझ पर पढ़ा था।**[1]

वोह पर्चा जिस में लिखा था दुरूद उस ने कभी
येह उस से नेकियां इस की बढ़ाने आए हैं[2]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

कोहे सफ़ा पर पहली नेकी की दा'वत

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इस्लाम की दा'वत को आ़म करने का हुक्म इरशाद हुवा तो आप

[1] .....موسوعہ ابن ابی دنیا، کتاب حسن الظن باللہ، ۱/ ۹۲، حدیث: ۷۹ مفہوماً و ملتقطاً
[2] .....सामाने बख़्शिश, स. 94

www.dawateislami.net

صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पहले कुछ अ़र्से तक तो ख़ुफ़्या त़ौर पर नेकी की दा'वत आ़म करते रहे और जब मुसलमानों की एक जमाअ़त तय्यार हो गई तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह सिलसिला मज़ीद आगे बढ़ाने का हुक्म मिला, चुनान्चे, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक दिन कोहे सफ़ा की चोटी पर चढ़ कर "या मा'शर कुरैश !" कह कर क़बीलए कुरैश को पुकारा। जब सब लोग जम्अ़ हो गए तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ मेरी क़ौम ! अगर मैं तुम से येह कह दूं कि इस पहाड़ के पीछे एक लश्कर छुपा हुवा है जो तुम पर ह़म्ला करने वाला है तो क्या तुम लोग मेरी बात का यक़ीन कर लोगे ? सब ने यक ज़बान हो कर कहा कि हां ! हां ! हम आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बात का यक़ीन कर लेंगे क्यूंकि हम ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को हमेशा सादिक़ और अमीन ही पाया है। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ठीक है तो फिर मैं येह कहता हूं कि मैं तुम लोगों को अ़ज़ाबे इलाही से डरा रहा हूं, अगर तुम ईमान न लाओगे तो तुम पर अ़ज़ाबे इलाही नाज़िल होगा। येह सुन कर तमाम कुरैश सख़्त नाराज़ हुवे और मज़ीद कुछ कहे सुने बिग़ैर सब के सब चले गए।[1]

चढ़ा कोहे सफ़ा पर एक दिन इस्लाम का हादी नज़र के सामने थी पस्तिये इन्सां की आबादी
सदा दी ऐ कुरैशी औ़रतो मर्दों इधर आओ ! येह अपने काम धन्दे आज तेह कर दो इधर आओ !
मिसाले रा'द हादी की सदा गूंजी हवाओं में ज़मीं से आस्मां तक गुलगुला उठा फ़ज़ाओं में
येह कड़का सुन के ख़ल्क़त घर से निकली उस त़रफ़ आई बढ़ी अम्बोह दर अम्बोह, दौड़ी सफ़ ब सफ़ आई
इकट्ठे हो गए आ कर जवान व पीरो मर्द व ज़न बनी आदम का जंगल बन गया येह कोह का दामन
ख़िताब उन से पैग़म्बर ने किया अल्लाह के बन्दो ! ख़लीलुल्लाह के पोतो ! ज़बीहुल्लाह के फ़रज़न्दो !
खड़ा हूं मैं तुम्हारे सामने ऐसी बुलन्दी पर वोह जानिब मुझ पर रौशन है जहां अच्छा बुरा मन्ज़र

[1] .....بخاری، کتاب التفسیر، باب ولا تخزنی یوم یبعثون، ص۱۲۱۱، حدیث: ۴۷۷۰ ملتقطًا

www.dawateislami.net

अगर मैं तुम से येह कह दूं कि इस कोहसार के पीछे पहाड़ों की बुलन्द और आहिनी दीवार के पीछे
छुपी है रहज़नों की फ़ौज तुम पर वार करने को घरों के लूटने को शहर के मिस्मार करने को
येह कह दूं अगर मैं तुम से तो क्या तुम मान जाओगे यक़ीं आ जाएगा मुझ पे कोई शक न लाओगे ?
कहा लोगों ने हां सच्चा है तू येह जानते हैं सब तू बचपन से सादिक़ है अमीं है मानते हैं सब
भला इस क़ौल पर कैसे यक़ीं हम को न आएगा बिला चूनो चरा मानेंगे कोई शक न लाएगा
येह सुन कर फिर बुलन्द आवाज़ से सच्चा नबी बोला इसी अन्दाज़ से कुरआने नातिक़ ने दहन खोला
कि ऐ लोगो मेरा कहना निहायत ग़ौर से सुन लो मैं कहता हूं कि बाज़ आ जाओ ज़ुल्मो जोर से सुन लो
बहाइम [1] की सिफ़त छोड़ो ज़रा इन्सान बन जाओ बुरे आ'माल से तौबा करो शर्माओ शर्माओ
फ़वाहिश और ज़िनाकारी मिटा दो नेक हो जाओ ख़ुदा को एक मानो और तुम भी एक हो जाओ
यग़ूसो लातो उज़्ज़ा कुछ नहीं बे जान पथ्थर हैं जिन्हें तुम पूजते हो वोह तो ख़ुद तुम से कमतर हैं
है ख़ालिक़ वोही सच्चा ख़ुदा मा'बूद है सब का वोही मत्लूब है सब का वोही मस्जूद है सब का
बुतों की बन्दगी के दाम से आज़ाद हो जाओ ख़ुदा के दामने तौहीद में आबाद हो जाओ
फंसा रखा है शैतान ने तुम्हें बातिल के फन्दे में न रखा फ़र्क़ तुम ने कुछ ख़ुदा में और बन्दे में
तुम्हारे वासिते मैं दौलते इस्लाम लाया हूं जो इब्राहीम लाए थे वोही पैग़ाम लाया हूं
ख़ुदाए क़ादिरो क़हहार पर ईमान ले आओ जहां के मालिको मुख़्तार पर ईमान ले आओ
जहालत छोड़ दो कुरआन पर ईमान ले आओ बुतों को तोड़ दो रहमान पर ईमान ले आओ
अगर ईमान ले आए तो बच जाओगे ऐ लोगो ! फ़लाहे दुन्यवी व उख़रवी पाओगे ऐ लोगो !

न मानोगे तो बरबादी का बादल छाने वाला है
बुरा वक़्त आने वाला है, बुरा वक़्त आने वाला है [2]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

1 ....चोपाए, मवेशी, हैवान (फ़ीरोज़ुल्लुग़ात जामेअ, स. 238)
2 .....शाहनामा इस्लाम मुकम्मल, स. 110

www.dawateislami.net

पहला अ़लल ए'लान दर्स

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नेकी की दा'वत पर मब्नी येह वोह पहला दर्स था जिस ने कुफ़्रो शिर्क के महल में ज़लज़ला बरपा कर दिया और देखते ही देखते बा वुजूद हज़ारों मसाइबो मुश्किलात के वोह तमाम लोग **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सजदा रेज़ होने लगे, जिन्हें कुफ़्रिस्तान के इस महल का मज़बूत सुतून समझा जाता था। यूं हर गुज़रते दिन के साथ साथ कुफ़्र की इस इमारत के दरो दीवार में कलिमए तौहीदो रिसालत की बुलन्द होने वाली सदाओं की वज्ह से पैदा होने वाली दराड़ों की रोक थाम के लिये कुरैशी सरदार हर मुमकिन कोशिशें करने लगे, येही वज्ह थी कि अगर उन के कान कहीं कलिमए हक़ की सदा सुन लेते तो येह आवाज़ उन्हें गोया तल्वार के ज़ख़्मों से भी ज़ियादा तक्लीफ़ देह महसूस होती और वोह इस आवाज़ को दबाने के लिये टूट पड़ते और ज़ुल्मो सितम की नई नई दास्तानें रक़म करते। इन के ज़ुल्मो जब्र को किसी ने कुछ यूं बयान किया है :

जिसे देखो उसी के मुंह में कफ़[1] थी कुफ़्र बकता था — ख़ुदा वाहिद है, गोया समझ में आ भी सकता था

बुतों और देवताओं की मज़म्मत जुर्म थी गोया — हुवा वोह शोरो शर बरपा, क़ियामत आ गई गोया

उन्हें तो हक़ से नफ़रत थी येह बातें किस तरह सुनते

खटकने लग गए कांटे जिन्हें, वोह फूल क्या चुनते[2]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

1 .....झाग, फीन (जो किसी इन्सान या किसी और जानदार के मुंह से जोश, जज़्बे या गुस्से के मौक़अ़ पर निकले।) (ऑन लाइन उर्दू लुग़त, उर्दू दाइरए मआ़रिफ़ुल उ़लूम)

2 .....शाहनामा इस्लाम मुकम्मल, स. 112

www.dawateislami.net

करूं तेरे नाम पे जां फ़िदा

इब्तिदाए इस्लाम में जो शख़्स मुसलमान होता वोह अपने इस्लाम को ह़त्तल वस्अ़ (जहां तक मुमकिन होता) मख़्फ़ी (या'नी छुपा) रखता कि हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से भी येही हुक्म था कि काफ़िरों की त़रफ़ से पहुंचने वाली तक्लीफ़ और नुक़्सान से महफ़ूज़ रहें। जब मुसलमान मर्दों की ता'दाद 38 हो गई तो ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने बारगाहे रसूले अन्वर में अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! अब अ़लल ए'लान तब्लीगे़ इस्लाम की इजाज़त इनायत फ़रमा दीजिये। शफ़ीए़ रोज़े शुमार, उम्मत के ग़म ख़्वार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अव्वलन इन्कार फ़रमाया, मगर फिर आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के इसरार पर इजाज़त इनायत फ़रमा दी। चुनान्चे, जब सब मुसलमान मस्जिदे ह़राम के गिर्द मौजूद अपने अपने क़बीलों में बैठ गए तो ख़त़ीबे अव्वल ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने ख़ुत़बे का आग़ाज़ किया, ख़ुत़बा शुरूअ़ होते ही कुफ़्फ़ारो मुशरिकीन चारों त़रफ़ से मुसलमानों पर टूट पड़े। मक्कए मुकर्रमा में आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की अ़ज़मत व शराफ़त मुसल्लम थी, इस के बा वुजूद कुफ़्फ़ारे बद अत्वार ने आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه पर भी इस क़दर ख़ूनी वार किये कि चेहरए मुबारक लहू लुहान हो गया यहां तक कि आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه बेहोश हो गए। जब आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के क़बीले वालों को ख़बर हुई तो वोह आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को वहां से उठा लाए, उन्हें गुमान था कि अब आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ज़िन्दा न बच सकेंगे। बहर ह़ाल शाम को जब आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को इफ़ाक़ा हुवा और होश में आए तो सब से पहले येह अल्फ़ाज़ ज़बाने सदाक़त निशान पर जारी हुवे : महबूबे रब्बे जुल जलाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का क्या ह़ाल है ?

www.dawateislami.net

लोगों की त़रफ़ से इस पर बहुत मलामत हुई कि उन का साथ देने की वज्ह से ही तो येह मुसीबत आई फिर भी उन्ही का नाम ले रहे हो।

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वालिदए माजिदा उम्मुल ख़ैर खाना ले आईं, मगर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की एक ही सदा थी कि शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का क्या ह़ाल है? वालिदए मोह़रतमा ने ला इल्मी का इज़्हार किया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : उम्मे जमील رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا (ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बहन) से दरयाफ़्त कीजिये, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वालिदए माजिदा, अपने लख़्ते जिगर की इस मज़्लूमाना ह़ालत में की गई बे ताबाना दरख़्वास्त पूरी करने के लिये ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे जमील رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास गईं और सरवरे मा'सूम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ह़ाल मा'लूम किया। वोह भी नामुसाइद (या'नी नासाज़गार) ह़ालात के सबब उस वक़्त अपना इस्लाम छुपाए हुवे थीं और चूंकि उम्मुल ख़ैर अभी तक मुसलमान न हुई थीं लिहाज़ा अन्जान बनते हुवे फ़रमाने लगीं : मैं क्या जानूं कौन मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) और कौन अबू बक्र (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ)। हां आप के बेटे की ह़ालत सुन कर रंज हुवा, अगर आप कहें तो मैं चल कर उन की ह़ालत देख लूं। उम्मुल ख़ैर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को अपने घर ले आईं। उन्हों ने जब ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ह़ालते ज़ार देखी तो तह़म्मुल (या'नी बरदाश्त) न कर सकीं और रोना शुरूअ़ कर दिया।

ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछा : मेरे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़ैर ख़बर दीजिये। ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे जमील رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने वालिदए साह़िबा की त़रफ़ इशारा करते हुवे तवज्जोह दिलाई। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि इन से ख़ौफ़ न कीजिये, तब उन्हों ने अ़र्ज़ की : नबिय्ये रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की

www.dawateislami.net

इनायत से ब ख़ैरो आ़फ़िय्यत हैं और दारे अरक़म या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना अरक़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के घर तशरीफ़ फ़रमा हैं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं उस वक़्त तक कोई चीज़ खाऊंगा न पियूंगा, जब तक शहनशाहे नुबुव्वत, सरापा ख़ैरो बरकत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की सआ़दत ह़ासिल न कर लूं। चुनान्चे, वालिदए माजिदा रात के आख़िरी ह़िस्से में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ले कर हुज़ूर ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा बरकत में दारे अरक़म ह़ाज़िर हुईं।

आ़शिक़े अक्बर ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से लिपट कर रोने लगे, आक़ाए ग़म गुसार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और वहां मौजूद दीगर मुसलमानों पर भी गिर्या (या'नी रोना) त़ारी हो गया कि सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ह़ालते ज़ार देखी न जाती थी। फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए बज़्मे हिदायत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की : येह मेरी वालिदए माजिदा हैं, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इन के लिये हिदायत की दुआ़ कीजिये और इन्हें दा'वते इस्लाम दीजिये। शाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन को इस्लाम की दा'वत दी, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ वोह उसी वक़्त मुसलमान हो गईं।[1]

करूं तेरे नाम पे जां फ़िदा न बस एक जां दो जहां फ़िदा
दो जहां से भी नहीं जी भरा करूं क्या करोरों जहां नहीं[2]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

[1] .....البدایۃ والنہایۃ، باب کیف بدا الوحی، فصل اول من اسلم...الخ، ۲/۳۴ ملتقطًا

[2] .....ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 109

www.dawateislami.net

इज़्हारे इस्लाम पर तशद्दुद का सामना

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आ़शिक़े अक्बर ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इ़लावा दीगर कई सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के मुतअ़ल्लिक़ भी मरवी है कि उन्हों ने मजमए़ आ़म में इज़्हारे ह़क़ की बिना पर मुसीबतों का सामना किया, जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू जमरह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने हमें ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस्लाम के ज़ाहिर होने के मुतअ़ल्लिक़ बताया कि उन्हों ने बारगाहे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! जो चाहें हुक्म इरशाद फ़रमाएं। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब तक तुम्हें इस्लाम के ग़ालिब आ जाने की इत्तिलाअ़ न मिले अपने घरवालों के पास रहो। उन्हों ने अ़र्ज़ की : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं अपने क़बूले इस्लाम का ए'लान व इज़्हार किये बिग़ैर नहीं जाऊंगा। चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मस्जिदे (ह़राम) की त़रफ़ चल पड़े (जहां कुफ़्फ़ारे मक्का अपने अपने क़बीलों की टोलियां बना कर बैठा करते थे) और बुलन्द आवाज़ से येह ए'लान करने लगे : मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस के रसूल हैं। मुशरिकीन येह सुन कर कहने लगे कि येह अपने दीन से फिर गया है। फिर मुशरिकीन चारों त़रफ़ से उन पर टूट पड़े और इतना मारा कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ गिर गए। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्त़लिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वहां से गुज़रे तो फ़रमाया : ऐ गुरौहे कुरैश ! तुम ताजिर हो और तुम्हारा गुज़र क़बीलए बनू ग़िफ़ार के पास से होता है, क्या तुम चाहते हो कि तुम्हारा रास्ता बन्द कर दिया जाए ? ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्त़लिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के कहने पर कुफ़्फ़ार उन्हें छोड़ कर चले गए। दूसरे

www.dawateislami.net

दिन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फिर इसी त़रह़ ए'लान कर दिया, जिस के नतीजे में कुफ़्फ़ार फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर टूट पड़े और मारने लगे । ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्त़लिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का फिर वहां से गुज़र हुवा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें छुड़ा लिया ।[1]

राहे ख़ुदा में मुश्किलात पर सब्र

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दीने इस्लाम की इशाअ़त व तरवीज के लिये किस क़दर मसाइबो आलाम बरदाश्त किये गए, इस्लाम के अ़ज़ीम मुबल्लिग़ीन ने तन मन धन सब राहे ख़ुदा में क़ुरबान कर दिया ! आज भी मदनी क़ाफ़िले में सफ़र पर जाते, इनफ़िरादी कोशिश फ़रमाते, सुन्नतें सीखते सिखाते या सुन्नतों पर अ़मल करते कराते हुवे, अगर मुश्किलात का सामना हो तो हमें आ़शिक़े अक्बर सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर और दीगर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के ह़ालात व वाक़िआ़त को पेशे नज़र रख कर अपने लिये तसल्ली का सामान मुहय्या कर के मदनी काम मज़ीद तेज़ तर कर देना चाहिये और दीन के लिये तन मन धन निसार (क़ुरबान) कर देने का जज़्बा अपने अन्दर उजागर करना चाहिये जैसा कि हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَہُمُ اللّٰہُ الْمُبِیْن इस्तिक़ामत के साथ दीने इस्लाम की ख़िदमत सर अन्जाम देते रहे ।

चन्द लोगों को जम्अ़ कर के दा'वत देना कैसा ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इब्तिदाए इस्लाम में जब सदाए ह़क़ बुलन्द करने को जुर्म समझा जाता था तो भी सरवरे काइनात, फ़ख़्रे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने न सिर्फ़ हर हर फ़र्द तक नेकी की दा'वत के

[1] .....معجم اوسط، باب الالف، من اسمہ ابراھیم، ۲/۹۴، حدیث: ۲۶۳۳

www.dawateislami.net

पैग़ाम को पहुंचाया बल्कि कई मवाक़ेअ़ पर मुख़्तलिफ़ क़बाइल के जम्अ़ होने वाले चीदा चीदा लोगों को भी राहे ह़क़ अपनाने का दर्स दिया। मसलन अय्यामे ह़ज में आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह मा'मूल था कि इस मौक़अ़ पर जम्अ़ होने वाले क़बाइले अ़रब के पास जा जा कर इस्लाम की दा'वत देते जैसा कि मरवी है कि जमरए अ़क़बा[1] के पास आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मदीनए मुनव्वरा के क़बीलए ख़ज़रज के कुछ लोगों को दा'वते इस्लाम दी और क़ुरआने करीम की चन्द आयतें तिलावत फ़रमाईं तो वोह इस्लाम ले आए।[2] इसी त़रह़ आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस वक़्त अ़रब के मश्हूर बाज़ारों मसलन ज़ुल मिजाज़[3] और उ़काज़[4] वग़ैरा में भी जा जा कर लोगों को नेकी की दा'वत दिया करते थे।[5] त़ाइफ़ का वाक़िआ़ भी इसी सिलसिले की एक कड़ी था।

तब्लीग़े दीन के इस त़रीक़े को सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अपने आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाहिरी ह़यात में ही नहीं बल्कि इस जहाने फ़ानी से पर्दा फ़रमा जाने के बा'द भी जारी रखा जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के दौरे ह़ुकूमत में एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना सुमैर अस्बह़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی मदीना शरीफ़ में ह़ाज़िर हुवे तो एक शख़्स के पास बहुत से लोगों का हुजूम देखा, किसी से पूछा : येह साह़िब कौन हैं ? तो उस ने बताया कि येह ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه हैं।

---

[1].....मिना में तीन मक़ामात जहां कंकरियां मारी जाती हैं उन्हें जमरात कहते हैं, पहले का नाम जमरतुल अ़क़बा है। इसे बड़ा शैत़ान भी बोलते हैं। दूसरे को जमरतुल वुस्त़ा (मंझला शैत़ान) और तीसरे को जमरतुल ऊला (छोटा शैत़ान) कहते हैं।

(बहारे शरीअ़त, इस्ति़लाह़ात, 1 / 67)

[2] ..... شرح الزرقانی علی المواهب، تابع المقصد الاول، ذکر عرض المصطفی...الخ، ۲/۷۴ ملتقطًا

[3] ..... مسند احمد، مسند الانصار، احادیث رجال من...الخ، ۹/۴۶۷، حدیث: ۲۳۸۳۶

[4] ..... اسد الغابة، حرف الضاد، ۷۷۰۷- ضباعة بنت عامر، ۷/ ۱۷۶

[5] ..... شرح الزرقانی علی المواهب، تابع المقصد الاول، ذکر عرض المصطفی...الخ، ۲/ ۷۳

www.dawateislami.net

चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना सुमैर अस्बह़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : मैं इन के क़रीब गया तो सुना कि आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه लोगों को ह़दीसे पाक का दर्स दे रहे हैं।(1) इसी त़रह़ जब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने सुन्नतों का दर्स आ़म करने के लिये मदीनए मुनव्वरा की पुर बहार फ़ज़ाओं को छोड़ कर मुल्के शाम का सफ़र इख़्तियार किया।(2) तो रिवायात में है कि कई बार आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने दिमश्क़ के लोगों को एक मक़ाम पर जम्अ़ किया और फिर खड़े हो कर उन को नेकी की दा'वत पेश की। मसलन एक बार जामेअ़ मस्जिद दिमश्क़ के बाहर खड़े हो कर आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : ऐ अह्ले दिमश्क़ ! तुम से पहले भी ऐसे लोग गुज़रे हैं, जिन्हों ने बहुत माल जम्अ़ किया, लम्बी उम्मीदें बांधी और मज़बूत़ इमारतें ता'मीर कीं लेकिन उन के जम्अ़ शुदा अमवाल तबाहो बरबाद हो गए, उन की उम्मीदें ख़ाक में मिल गईं और उन के मह़ल्लात उन की क़ब्रों में तब्दील हो गए।(3)

बुज़ुर्गाने दीन का अ़मल

सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के बा'द दीगर सलफ़ सालिह़ीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن ने भी नेकी की दा'वत को आ़म करने के लिये येह त़रीक़ा जारी रखा और सफ़र हो या ह़ज़र, येह नुफ़ूसे क़ुदसिय्या हर ह़ाल में लोगों को नूरे इल्म से मुनव्वर करने का कोई मौक़अ़ हाथ से न जाने देते, जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا के आज़ाद कर्दा गुलाम ह़ज़रते सय्यिदुना इकरिमा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के मुतअ़ल्लिक़ मरवी है कि आप को इस उम्मत का ह़िब्र या'नी बहुत बड़ा आ़लिम कहा जाता

[1]........تنبیہ الغافلین، باب الاخلاص، ص ۲

[2]........تاریخ دمشق، ذکر من اسمه عون، ۵۴۲۴-عویمر بن زید بن قیس، ۴۷/۱۳۵ ملتقطاً

[3]........تاریخ دمشق، ذکر من اسمه عون، ۵۴۲۴-عویمر بن زید بن قیس، ۴۷/۱۳۲

www.dawateislami.net

है। आप मुख़्तलिफ़ मुमालिक का सफ़र किया करते और जहां भी क़ियाम फ़रमाते इल्मे दीन सीखने के लिये कसीर ता'दाद में लोग जम्अ़ हो जाते। जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अय्यूब सख़्तियानी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه बयान करते हैं कि एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना इ़करिमा رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه हमारे पास तशरीफ़ लाए तो ह़ुसूले इ़ल्म के लिये आप के पास इतने लोग जम्अ़ हो गए कि आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को मकान की छत पर बैठना पड़ा। इसी त़रह़ एक मरतबा आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه बसरा के बाज़ार में तशरीफ़ लाए तो वहां भी जम्अ़ हो जाने वाले कसीर लोगों में आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه इ़ल्मे दीन के बेश बहा मोती लुटाने लगे।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि एक वक़्त था जब लोगों में इ़ल्मे दीन सीखने का ह़द दरजा जज़्बा था और वोह ह़ुसूले इ़ल्मे दीन के लिये हर मुमकिन कोशिश करते नज़र भी आते थे, मगर अफ़्सोस ! सद अफ़्सोस ! आज हमारी ह़ालत येह हो चुकी है कि इ़ल्मे दीन से दूरी के सबब बह़रे इ़स्यां (गुनाहों के समन्दर) में ग़र्क़ हैं, हमारी मसाजिद वीरान होती जा रही हैं, इन में इ़ल्मे दीन के ह़ल्क़ों में शिर्कत तो कुजा नमाज़ियों की ता'दाद भी ह़द दरजा कम हो चुकी है, इन ह़ालात के पेशे नज़र ज़रूरत थी कि कोई ऐसा त़रीक़ा अपनाया जाए, जिस से मुसलमान नमाज़ और इ़ल्मे दीन के ह़ल्क़ों में शिर्कत के लिये मसाजिद का रुख़ करें, चुनान्चे, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मस्जिद भरो तह़रीक दा'वते इस्लामी "**चौक दर्स**" की सूरत में इस नेक मक़्सद के ह़ुसूल के लिये कोशां है, चौक दर्स ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी कामों में से रोज़ाना का एक अहम मदनी काम है।

[1] ..... حلية الاولياء، ۲۴۵-عكرمة مولى ابن عباس، ۳/ ۳۷۵ تا ۳۷۷، رقم: ۴۳۲۶، ۴۳۳۲، ۴۳۳۶ ملتقطًا

www.dawateislami.net

चौक दर्स क्या है ?

मस्जिद और घर के इ़लावा जिस भी मक़ाम (चौक, बाज़ार, स्कूल, कॉलेज, इदारे वग़ैरा) पर जो मदनी दर्स दिया जाता है, उसे दा'वते इस्लामी की इस्तिलाह़ में चौक दर्स कहते हैं। जिस का मक़्सद ऐसे अफ़राद तक नेकी की दा'वत पहुंचाना है, जो मसाजिद में नहीं आते ताकि वोह भी मस्जिद में आने वाले और बा जमाअ़त नमाज़ पढ़ने वाले बन जाएं और दा'वते इस्लामी का मदनी पैग़ाम क़बूल कर के राहे सुन्नत पर गामज़न हो जाएं। चौक दर्स की तरग़ीब दिलाते हुवे शैख़े त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : चौक दर्स दें कि इस की बरकत से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो लोग मस्जिद नहीं आते, वोह भी नमाज़ पढ़ने आएंगे।[1]

"नेकी की दा'वत"

के दस हुरूफ़ की निस्बत से चौक दर्स के ﴿10﴾ फ़वाइद

1- ख़ूब नेकियां बढ़ाने का ज़रीआ़

चौक दर्स देना भी नेकियां बढ़ाने का ज़रीआ़ है, क्यूंकि दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर दगार, मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : اِنَّ الدَّآلَّ عَلَى الْخَيْرِ كَفَاعِلِهٖ या'नी बेशक नेकी की राह दिखाने वाला नेकी करने वाले की त़रह़ है।[2]

[1].....ओफ़ एर मदनी मुज़ाकरा, 20 शव्वालुल मुकर्रम, 16 अगस्त 2015

[2] .....ترمذی، ابواب العلم، باب ماجاء الدال علی الخیر...الخ، ص۶۲۸، حدیث: ۲۶۷۰ ملتقطًا

www.dawateislami.net

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : नेकी करने वाला, कराने वाला, बताने वाला (और) मश्वरा देने वाला सब सवाब के मुस्तह़िक़ (या'नी ह़क़दार) हैं।[1]

मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बरकत निशान है : जो हिदायत की त़रफ़ बुलाए, उस को तमाम आ़मिलीन (या'नी अ़मल करने वालों) की त़रह़ सवाब मिलेगा और इस से उन (अ़मल करने वालों) के अपने सवाब से कुछ कम न होगा और जो गुमराही की त़रफ़ बुलाए तो उस पर तमाम पैरवी करने वाले गुमराहों के बराबर गुनाह होगा और येह उन के गुनाहों से कुछ कम न करेगा।[2]

अ़त्तार से मह़बूब की सुन्नत की ले ख़िदमत
डंका येह तेरे दीन का दुन्या में बजा दे [3]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

2- नेकियों पर इस्तिक़ामत का ज़रीआ़

चौक दर्स नेकियों पर इस्तिक़ामत का भी एक ज़रीआ़ है, जब बन्दा किसी को नेकी की दा'वत देता है तो ख़ुद उस नेकी पर इस्तिक़ामत ह़ासिल करना उस के लिये आसान हो जाता है, बल्कि अगर कमज़ोरी भी हो तो उस के दूर होने का इमकान भी होता है, किसी बुज़ुर्ग के क़ौल का मफ़्हूम है कि जिस नेक काम पर इस्तिक़ामत मक़्सूद हो उस की दूसरों को तरग़ीब दिलाइये, اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ इस्तिक़ामत नसीब हो जाएगी।

[1].....मिरआतुल मनाजीह़, इ़ल्म की किताब, पहली फ़स्ल, 1 / 194

[2] ..... مسلم، کتاب العلم، باب من سن سنة حسنة...الخ، ص ۱۰۳۲، حدیث: ۲۶۷۴

[3].....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 112

www.dawateislami.net

इस्तिक़ामत दीन पर मुझ को अ़ता फ़रमाइये

या रसूलल्लाह बराए आले यासिर या नबी (1)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

3- बाज़ार में ज़िक्रुल्लाह का सवाब

चौक दर्स देना ज़िक्रुल्लाह की ही एक सूरत है, जैसा कि शैख़े त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : इस्लामी भाइयों को चाहिये कि रोज़ाना कम से कम 12 मिनट बाज़ार में मदनी दर्स दें। जितनी देर तक दर्स देंगे اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ उतनी देर तक के लिये दीगर फ़ज़ाइल के इ़लावा उसे बाज़ार में ज़िक्रुल्लाह करने का सवाब भी ह़ासिल होगा।(2) और बाज़ार में ज़िक्रुल्लाह की फ़ज़ीलत के मुतअ़ल्लिक़ सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़्फ़िरत निशान है : बाज़ार में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करने वाले के लिये हर बाल के बदले क़ियामत में नूर होगा।(3) और एक रिवायत में है कि जो शख़्स बाज़ार में दाख़िल होते वक़्त येह कलिमात कहे :

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ
يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ وَهُوَ حَيٌّ لَّا يَمُوْتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ كُلُّهٗ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये एक लाख नेकियां लिख देता है, उस के एक लाख गुनाह मिटा देता है और उस के लिये जन्नत में घर बनाता है।(4) चुनान्चे, येही वज्ह है कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर, सालिम

1 .....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 378

2 .....ग़ीबत की तबाहकारियां, स. 136

3 .....شعب الايمان، باب فی محبة الله، فصل فی ادامة ذكر الله، ۱/۴۱۲، حديث: ۵۶۷ ملتقطًا

4 .....ابن ماجه، كتاب التجارات، باب الاسواق ودخولها، ص ۳۵۷، حديث: ۲۲۳۵

www.dawateislami.net

बिन अ़ब्दुल्लाह और मुह़म्मद बिन वासेअ़ (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) सिर्फ़ ज़िक्रुल्लाह की फ़ज़ीलत पाने के लिये बाज़ार जाया करते थे।[1]

4- मसाजिद की आबाद कारी का ज़रीआ़

बद क़िस्मती के साथ मुसलमानों की ग़ालिब अक्सरिय्यत मस्जिद में नहीं आती, चौक दर्स की बरकत से जब इन तक नेकी की दा'वत पहुंचेगी तो उम्मीद है जो लोग मस्जिद में नहीं आते वोह नमाज़ पढ़ने लगेंगे और इस त़रह़ मस्जिद में नमाज़ियों की ता'दाद बढ़ने से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मस्जिदें भी आबाद होंगी।

हो जाएं मौला मस्जिदें आबाद सब की सब
सब को नमाज़ी दे बना या रब्बे मुस्त़फ़ा[2]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

5- मशक़्क़त ज़ियादा तो सवाब भी ज़ियादा

चौक दर्स में चूंकि मस्जिद दर्स की निस्बत मशक़्क़त ज़ियादा है, इस लिये उम्मीद है कि इस में सवाब भी ज़ियादा होगा। जैसा कि एक रिवायत में है कि اَفْضَلُ الْعِبَادَةِ اَحْمَزُهَا या'नी अफ़्ज़ल तरीन इबादत वोह है जिस में ज़ह़मत ज़ियादा हो।[3] और ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : दुन्या में जो अ़मल जितना दुश्वार होगा, बरोज़े क़ियामत मीज़ाने अ़मल में वोह उतना ही ज़ियादा वज़्नदार होगा।[4]

---

[1] .....احیاء علوم الدین، کتاب آداب الکسب والمعاش، الباب الخامس فی شفقة...الخ، ۲/ ۱۰۹

[2] .....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 131

[3] ..... کشف الخفاء، حرف الهمزة مع الفاء، ۱/ ۱۴۱، حدیث: ۴۵۹

[4] ..... تذکرۃ الاولیاء، باب یازدہم، ذکر ابراہیم بن ادہم، ۱/ ۹۵

www.dawateislami.net

6- सब्र का सवाब

चौक दर्स में बा'ज़ औक़ात लोगों को दर्स की त़रफ़ बुलाते हुवे नफ़्स को गिरां जुम्ले भी सुनना पड़ते हैं (मसलन बसा औक़ात ऐसा भी होता है कि अगर किसी को चौक दर्स में शिर्कत की दा'वत दी जाए तो इस त़रह़ के जवाबात सुनने को मिलते हैं : ۞ ह़ज़रत मेरे पास अभी टाइम नहीं है, काम का वक़्त है, बा'द में सुन लेंगे ۞ मौलाना हमें पता है नमाज़ पढ़नी होती है, हमें सब कुछ आता है, आप किसी और को दर्स दें ۞ भय्या ! नज़र नहीं आता, दुकानदारी का वक़्त है, इस वक़्त दर्स कैसे सुनें, जब हम फ़ारिग़ होंगे, फिर सुनेंगे वग़ैरा), अगर मुबल्लिग़ हुस्ने अख़्लाक़ से इस वक़्त सब्र से काम लेगा तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ सब्र का अ़ज़ीम सवाब पाएगा।

कोई धुतकारे या झाड़े बल्कि मारे सब्र कर
मत झगड़, मत बुड़बुड़ा, पा अज्र रब से सब्र कर[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

7- सलाम की सुन्नत को आ़म करने का ज़रीआ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! चौक दर्स सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सलाम वाली प्यारी प्यारी सुन्नत को आ़म करने का भी ज़रीआ़ है और वोह यूं कि जब किसी बा रौनक़ मक़ाम पर चौक दर्स की तरकीब बनाई जाती है तो चौक दर्स से क़ब्ल, दर्स में शिर्कत के लिये इनफ़िरादी कोशिश करते हुवे मुसलमानों को सलाम, इख़्तिताम दर्स पर शुरकाए दर्स को बाहम सलाम व मुसाफ़ह़ा वाली सुन्नत पर अ़मल के सवाब के साथ साथ बाज़ार में सलाम करने के फ़ज़ाइलो बरकात भी ह़ासिल होते हैं।

[1] .....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 694

www.dawateislami.net

ज़माने भर में मचा देंगे धूम सुन्नत की

अगर करम ने तेरे साथ दे दिया या रब ! (1)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मुसलमानों को सलाम करने से आपस में महब्बत बढ़ती है। चुनान्चे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रहमत निशान है : क्या मैं तुम को ऐसी बात न बताऊं कि जब तुम उस पर अमल करो तो तुम्हारे दरमियान महब्बत बढ़े और वोह येह है कि आपस में सलाम को आम करो।(2) चुनान्चे, बा'ज़ सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان सिर्फ़ मुसलमानों को सलाम करने वाली सुन्नत पर अमल की ग़रज़ से बाज़ार जाया करते थे जैसा कि मरवी है हज़रते सय्यिदुना तुफ़ैल बिन उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه जब हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا के पास जाते तो वोह उन को साथ ले कर बाज़ार की तरफ़ चल पड़ते आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه जिस रद्दी फ़रोश, दुकानदार या मिस्कीन के पास से गुज़रते तो उस को सलाम कहते। हज़रते सय्यिदुना तुफ़ैल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه कहते हैं : एक दिन मैं उन के पास गया तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने मुझे बाज़ार चलने को कहा, मैं ने अर्ज़ की : बाज़ार जा कर क्या करेंगे ? वहां आप न तो ख़रीदारी के लिये रुकते हैं न सामान के मुतअ़ल्लिक़ पूछते हैं न भाव करते हैं और न ही बाज़ार की मजलिस में बैठते हैं, मेरी तो गुज़ारिश येह है कि यहीं हमारे पास तशरीफ़ रखें, हम बातें करेंगे। फ़रमाया : हम सिर्फ़ सलाम की ग़रज़ से जाते हैं और जिस से मिलते हैं उस को सलाम कहते हैं।(3)

8- दा'वते इस्लामी का तआ़रुफ़ व तशहीर

चौक दर्स दा'वते इस्लामी के तआ़रुफ़ व तशहीर और नेकनामी का भी एक बेहतरीन ज़रीआ़ है, क्यूंकि इस तरह़ बाज़ार से तअ़ल्लुक़

1 .....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 88

2 ..... مسلم، کتاب الایمان، باب بیان ان لا یدخل الجنة...الخ، ص ۴۴، حدیث: ۵۴

..... موطا امام مالك، کتاب السلام، باب جامع السلام، ص ۵۰۷، حدیث: ۱۸۴۴

www.dawateislami.net

रखने वाले कई आ़शिक़ाने रसूल तक दा'वते इस्लामी का मदनी पैग़ाम पहुंचने से दा'वते इस्लामी के मदनी मक़्सद का तआ़रुफ़ होगा, हो सकता है कि इस चौक दर्स की बरकत से कोई आ़शिक़े रसूल, इस मदनी मक़्सद को अपनी ज़िन्दगी में अ़मली त़ौर पर नाफ़िज़ करने के लिये कमरबस्ता हो जाए, वोह मदनी मक़्सद क्या है : **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।"** اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस त़रह़ दा'वते इस्लामी से मह़ब्बत करने वालों की ता'दाद में न सिर्फ़ ख़ात़िर ख़्वाह इज़ाफ़ा होगा बल्कि थोड़ी सी इनफ़िरादी कोशिश से दीगर मदनी कामों के लिये भी इस्लामी भाई तय्यार हो जाएंगे। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

9- अमीरे अह्ले सुन्नत की दुआ़एं लेने का ज़रीआ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मदनी दर्स (फ़ैज़ाने सुन्नत का दर्स) देने वाले इस्लामी भाइयों को शैख़े त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपनी दुआ़ओं से भी नवाज़ते हैं, चुनान्चे, दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 504 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब ग़ीबत की तबाहकारियां सफ़ह़ा 136 पर तह़रीर फ़रमाते हैं : फ़ैज़ाने सुन्नत के दर्स की भी क्या ख़ूब मदनी बहारें हैं, काश ! इस्लामी भाई मस्जिद, घर, बाज़ार, चौक, दुकान वग़ैरा में और इस्लामी बहनें घर में रोज़ाना दो दर्स देने या सुनने का मा'मूल बना कर ख़ूब ख़ूब सवाब लूटें और साथ ही साथ इस दुआ़ए अ़त्तार के भी ह़क़दार बन जाएं : या रब्बे मुह़म्मद عَزَّوَجَلَّ ! जो इस्लामी भाई या इस्लामी बहन रोज़ाना दो दर्स दें या सुनें उन को और मुझे बे ह़िसाब बख़्श और हमें हमारे मदनी आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पड़ोस में इकठ्ठा रख।

जो दे रोज़ दो "दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत" मैं देता हूं उस को दुआ़ए मदीना[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

1 .....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 369

www.dawateislami.net

दर्स के तीन हुरूफ़ की निस्बत से दर्स देने के 3 फ़ज़ाइल

﴾1﴿ ☞ **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो शख़्स मेरी उम्मत तक कोई इस्लामी बात पहुंचाए ताकि उस से सुन्नत क़ाइम की जाए या उस से बद मज़हबी दूर की जाए तो वोह जन्नती है।[1]

﴾2﴿ ☞ **सरकारे मदीना** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को तरो ताज़ा रखे जो मेरी ह़दीस सुने, उसे याद रखे और दूसरों तक पहुंचाए।[2]

﴾3﴿ ☞ **ह़ज़रते सय्यिदुना इदरीस** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मुबारक नाम की एक ह़िक्मत येह भी है कि आप عَلَيْهِ السَّلَام **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़ताकर्दा सह़ीफ़ों की कसरत से दर्स व तदरीस फ़रमाया करते थे। लिहाज़ा आप عَلَيْهِ السَّلَام का नाम ही इदरीस हो गया।[3]

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ के उन्नीस हुरूफ़ की निस्बत से चौक दर्स देने के ﴾19﴿ मदनी फूल

﴾1﴿ ☞ चौक दर्स एक ही मक़ाम पर वक़्त मुक़र्रर कर के दिया जाए, बल्कि चौक दर्स के लिये ऐसी जगह और वक़्त मुन्तख़ब कीजिये, जिस में ज़ियादा से ज़ियादा इस्लामी भाई शरीक हो सकें। (अगर निगराने ह़ल्क़ा / ज़ैली ह़ल्क़ा मुशावरत के मश्वरे से मक़ाम तै़ करें तो मदीना मदीना)

﴾2﴿ ☞ चौक दर्स अज़ान से पहले दिया जाए। (चौक दर्स के शुरका की सुहूलत के पेशे नज़र (या'नी जिस वक़्त ज़ियादा से ज़ियादा आ़शिक़ाने रसूल की दर्स में शिर्कत हो सके) किसी भी नमाज़ से क़ब्ल चौक दर्स दिया जा सक्ता है, बिलख़ुसूस बाज़ार / मार्केट में चौक दर्स ग़ालिबन ज़ोहर / अ़स्र की नमाज़ से क़ब्ल बेहतर है, अलबत्ता दौराने मदनी क़ाफ़िला मदनी क़ाफ़िले के जदवल के मुताबिक़ ही चौक दर्स दिया जाए)

[1] ..... جامع صغیر، حرف المیم، ص ۵۱۰، حدیث: ۸۳۶۳

[2] ..... ترمذی، ابواب العلم، باب ماجاء فی الحث...الخ، ص ۶۲۶، حدیث: ۲۶۵۶

[3] ..... تفسیر کبیر، پ ۱۶، مریم، تحت الآیۃ: ۵۶، ۷/ ۵۵۰

www.dawateislami.net

﴾3﴿ ☞ चौक दर्स शुरूअ़ होने से पहले ख़ैर ख़्वाह इस्लामी भाई क़ुर्बो जवार में मौजूद इस्लामी भाइयों और राहगीरों को जम्अ़ कर लें।

﴾4﴿ ☞ आवाज़ ज़ियादा बुलन्द हो न बिल्कुल आहिस्ता, ह़त्तल इमकान इतनी आवाज़ से दर्स दीजिये कि ह़ाज़िरीन सुन सकें।

﴾5﴿ ☞ दर्स हमेशा ठहर ठहर कर और धीमे अन्दाज़ में दीजिये।

﴾6﴿ ☞ जो कुछ दर्स देना है, पहले उस का कम अज़ कम एक बार मुत़ालआ़ कर लीजिये ताकि ग़लत़ियां न हों।

﴾7﴿ ☞ मुअ़र्रब अल्फ़ाज़ (या'नी जिन लफ़्ज़ों पर ज़बर, ज़ेर और पेश वग़ैरा लिखा हुवा है, उन को) ए'राब के मुत़ाबिक़ ही अदा कीजिये, इस त़रह़ اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ तलफ़्फ़ुज़ की दुरुस्त अदाएगी की आ़दत बनेगी।

﴾8﴿ ☞ ह़म्दो सलात, दुरूदो सलाम के चारों सीग़े, आयते दुरूद और इख़्तितामी आयात वग़ैरा किसी सुन्नी आ़लिम या क़ारी को ज़रूर सुना दीजिये। इसी त़रह़ अ़रबी दुआ़एं वग़ैरा जब तक उ़लमाए अह्ले सुन्नत को न सुना लें, अकेले में अपने त़ौर पर भी न पढ़ा करें।

﴾9﴿ ☞ चौक दर्स का दौरानिया 7 मिनट होना चाहिये।

﴾10﴿ ☞ चौक दर्स के बा'द तमाम शुरकाए दर्स से ख़न्दा पेशानी से मुसाफ़ह़ा की तरकीब की जाए और मुलाक़ात कर के बा जमाअ़त नमाज़ अदा करने की तरग़ीब दिलाई जाए।

﴾11﴿ ☞ जो इस्लामी भाई नमाज़े बा जमाअ़त के लिये तय्यार हों, उन को अपने साथ ही मस्जिद में ले जाएं।

﴾12﴿ ☞ चौक दर्स में हुक़ूक़े आ़म्मा का ख़याल रखिये, मसलन ट्रैफ़िक, राह चलने वाले मुसलमानों और मवेशियों वग़ैरा का रास्ता रोके बिग़ैर चौक दर्स की तरकीब बनाई जाए।

﴾13﴿ ☞ चौक दर्स में दा'वते इस्लामी का तआ़रुफ़ और हफ़्तावार इजतिमाअ़ और मदनी मुज़ाकरे की दा'वत भी दी जाए।

﴾14﴿ ☞ चौक दर्स के दौरान अज़ान शुरूअ़ हो जाने पर ख़ामोश हो

www.dawateislami.net

जाइये और अज़ान का जवाब दीजिये। इस दौरान इशारे से गुफ़्तगू और दीगर कामों वग़ैरा से भी इजतिनाब कीजिये (अज़ानो इक़ामत के वक़्त हमेशा इसी त़रह़ एहतिमाम फ़रमाइये)

﴾15﴿ ☞ चौक दर्स के दौरान अगर अज़ान हो जाए तो दर्स देने वाले इस्लामी भाई शुरकाए दर्स को साथ ला कर मस्जिद में मअ़ सुन्नते क़ब्लिय्या पहली सफ़ में तक्बीरे ऊला के साथ ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ की सअ़्य (कोशिश) करते हुवे बा जमाअ़त नमाज़ अदा करें।

﴾16﴿ ☞ ख़ुद भी बा जमाअ़त नमाज़ अदा करना और चौक दर्स के शुरका को भी तरग़ीब दिला कर मस्जिद में लाना गोया चौक दर्स की कमाई है।

(मदनी क़ाफ़िले में चौक दर्स देने के मदनी फूल)

﴾17﴿ ☞ मदनी क़ाफ़िले के जदवल के दौरान दर्स उसी चौक में दिया जाए, जो उस मस्जिद से क़रीब हो जहां मदनी क़ाफ़िला ठहरा हुवा हो।

﴾18﴿ ☞ मदनी क़ाफ़िले के जदवल के दौरान चौक दर्स के आख़िर में अपने मदनी क़ाफ़िले का तआ़रुफ़ ज़रूर करवाया जाए, फिर जिस मस्जिद में मदनी क़ाफ़िला ठहरा हुवा हो, इस्लामी भाइयों को उसी मस्जिद में ज़ोहर की नमाज़ बा जमाअ़त अदा करने, मदनी क़ाफ़िले के जदवल में सीखने सिखाने के ह़ल्क़ों में शिर्कत करने और मदनी क़ाफ़िले वालों से आ कर मुलाक़ात की दा'वत दी जाए।

﴾19﴿ ☞ हर मुबल्लिग़ को चाहिये[1] कि वोह दर्स का त़रीक़ा, बा'द की तरग़ीब और इख़्तिताम दुआ़ ज़बानी याद कर ले।

[1] .....**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** हर वोह इस्लामी भाई जो किसी मजमअ़ में दर्सो बयान करने लगे तो उसे चाहिये कि वोह उन तमाम बातों को भी पेशे नज़र रखे जिन का किसी मुबल्लिग़ में पाया जाना बेह़द ज़रूरी है। चुनान्चे, तफ़्सील के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ कुतुब "इनफ़िरादी कोशिश मअ़ 25 ह़िकायाते अ़त्तारिया" और "सह़ाबी की इनफ़िरादी कोशिश" का मुत़ालआ़ कीजिये।

www.dawateislami.net

चौक दर्स देने का त़रीक़ा

चौक दर्स की इब्तिदा इस त़रह़ कीजिये :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

इस के बा'द इस त़रह़ दुरूदो सलाम पढ़ाइये :

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

फिर इस त़रह़ कहिये :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! निगाहें नीची किये तवज्जोह के साथ रिज़ाए इलाही के लिये इल्मे दीन ह़ासिल करने की निय्यत से दर्स[1] सुनिये कि ला परवाही के साथ इधर उधर देखते हुवे, लिबास, बदन या बालों वग़ैरा को सहलाते हुवे सुनने से इस की बरकतें ज़ाइल होने का अन्देशा है। येह कहने के बा'द देख कर दुरूद शरीफ़ की एक फ़ज़ीलत बयान कीजिये। फिर कहिये :

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जो कुछ लिखा हुवा है, वोही पढ़ कर सुनाइये। आयात व अ़रबी इबारात का सिर्फ़ तर्जमा पढ़िये। किसी भी आयत या ह़दीस का अपनी राए से हरगिज़ ख़ुलासा मत कीजिये।

दर्स के आख़िर में इस त़रह़ तरग़ीब दिलाइये !

(हर मुबल्लिग़ को चाहिये कि ज़बानी याद कर ले और दर्सो बयान के आख़िर में बिला कमी व बेशी इसी त़रह़ तरग़ीब दिलाया करे)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के महके महके मदनी माह़ोल में ब कसरत सुन्नतें

[1].....फ़ैज़ाने सुन्नत के इलावा अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के किसी रिसाले से भी दर्स हो सकता है, जिस रिसाले या किताब से दर्स दें, उस का नाम लें।

www.dawateislami.net

सीखी और सिखाई जाती हैं। हर जुमा'रात को मग़रिब की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की मदनी इल्तिजा है। आशिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िलों में सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए मदनी इन्आमात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की यकुम तारीख़ को अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा। हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि **मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये मदनी इन्आमात पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो [1]

आख़िर में ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ (ख़ुशूअ़ या'नी बदन की आ़जिज़ी और ख़ुज़ूअ़ या'नी दिलो दिमाग़ की ह़ाज़िरी) के साथ दुआ़ में हाथ उठाने के आदाब बजा लाते हुवे बिला कमी व बेशी इस त़रह़ दुआ़ मांगिये :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ

या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ ! ब तुफ़ैले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमारी, हमारे मां बाप की और सारी उम्मत की मग़फ़िरत फ़रमा। या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! दर्स की ग़लतियां और तमाम गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा, नेक अ़मल का जज़्बा दे, हमें परहेज़गार और मां बाप का फ़रमां बरदार बना। या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें अपना और अपने मदनी ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

[1] .....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 315

www.dawateislami.net

का मुख़्लिस आ़शिक़ बना । हमें गुनाहों की बीमारियों से शिफ़ा अ़ता फ़रमा । या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें मदनी इन्आ़मात पर अ़मल करने, मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने और इनफ़िरादी कोशिश के ज़रीए़ दूसरों को भी मदनी कामों की तरग़ीब दिलवाने का जज़्बा अ़ता फ़रमा । या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुसलमानों को बीमारियों, क़र्ज़दारियों, बे रोज़गारियों, बे औलादियों, बेजा मुक़द्दमे बाज़ियों और त़रह़ त़रह़ की परेशानियों से नजात अ़ता फ़रमा । या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इस्लाम का बोल बाला कर और दुश्मनाने इस्लाम का मुंह काला कर । या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में इस्तिक़ामत अ़ता फ़रमा । या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा जल्वए मह़बूब में शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मद्फ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में अपने मदनी ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब फ़रमा । या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मदीने की ख़ुश्बूदार ठन्डी ठन्डी हवाओं का वासित़ा हमारी जाइज़ दुआ़एं क़बूल फ़रमा ।

कहते रहते हैं दुआ़ के वासित़े बन्दे तेरे
कर दे पूरी आरज़ू हर बे कसो मजबूर की[1]

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

शे'र के बा'द येह आयते मुबारका पढ़िये :

اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓىٕكَتَهٗ یُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِیِّ ؕ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَیْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِیْمًا ﴿۵۶﴾ (پ۲۲، الاحزاب: ۵۶)

सब दुरूद शरीफ़ पढ़ लें तो फिर पढ़िये :

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا یَصِفُوْنَ ﴿۱۸۰﴾ وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِیْنَ ﴿۱۸۱﴾ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۱۸۲﴾ (پ۲۳، الصّٰفّٰت: ۱۸۰تا۱۸۲)

दर्स की कमाई पाने के लिये ख़न्दा पेशानी के साथ लोगों से मुलाक़ात कीजिये, चन्द नए इस्लामी भाइयों को अपने क़रीब कर लीजिये और इनफ़िरादी कोशिश के ज़रीए़ उन्हें मदनी इन्आ़मात और मदनी क़ाफ़िलों की बरकतें समझाइये ।

[1] .....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 96

www.dawateislami.net

तुम्हें ऐ मुबल्लिग़ ! येह मेरी दुआ है
किये जाओ तै तुम तरक़्क़ी का ज़ीना[1]

दुआए अ़त्तार : या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरी और पाबन्दी के साथ रोज़ाना कम अज़ कम दो दर्स एक घर में और दूसरा मस्जिद, चौक या स्कूल वग़ैरा में देने और सुनने वाले की मग़फ़िरत फ़रमा और हमें हुस्ने अख़्लाक़ का पैकर बना।[2] اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

चौक दर्स की मदनी बहार

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के तह़्त गुनाहों से बचने और नेकियों को आ़म करने के लिये मसाजिद में दर्सो बयान व हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ व दीगर मदनी कामों के साथ साथ बाज़ारों, स्कूल्ज़, कॉलेजिज़ व दीगर इदारों व मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर चौक दर्स में शैख़े त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की शोहरए आफ़ाक़ तालीफ़ फ़ैज़ाने सुन्नत और अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की दीगर कुतुबो रसाइल (जिन से दर्स देने की मर्कज़ी मजलिसे शूरा की त़रफ़ से इजाज़त है) से दर्स की तरकीब भी होती है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत की बरकत से इस्लाह़े उम्मत का अ़ज़ीम काम रोज़ ब रोज़ बढ़ रहा है। इस की बरकत से बेशुमार लोगों को राहे हिदायत नसीब हुई, कल तक जो दीन की बुन्यादी मा'लूमात से भी ना बलद (या'नी नावाक़िफ़) थे इ़ल्मे दीन से वाक़िफ़ होने के साथ साथ फ़राइज़ उ़लूम तक सीखने

1 .....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 371
2 .....नेकी की दा'वत, स. 604 ता 607

www.dawateislami.net

सिखाने वाले बन गए, अ़मल के जज़्बे से आ़री लोग नमाज़ी व परहेज़गार बन गए, हुब्बे दुन्या में ग़र्क़ महब्बते इलाही से सरशार और इ़श्क़े नबी के असीर हो गए, कल तक जो फ़िल्मों ड्रामों और मूसीक़ी के दिलदादा और सीनेमा घरों की ज़ीनत बने रहते थे, आज वोह बा ह़या होने के साथ साथ सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी प्यारी सुन्नतों के पैकर बन गए। होटलों में घन्टों बैठ कर फ़िल्में ड्रामे देख कर ज़िन्दगी के क़ीमती लम्ह़ात को ज़ाएअ़ करने वाले मसाजिद में अपने शबो रोज़ बसर करने लगे। आइये तरग़ीब के लिये चौक दर्स की एक मदनी बहार मुलाह़ज़ा कीजिये कि चौक दर्स की बरकत से किस त़रह़ एक नौजवान की गुनाहों भरी ज़िन्दगी में मदनी इन्क़िलाब आया। चुनान्चे,

होटल की ज़ीनत बनने वाला नौजवान

ज़मज़म नगर (ह़ैदराबाद, बाबुल इस्लाम, सिन्ध) के अ़लाक़े लत़ीफ़ाबाद के यूनिट नम्बर 8 ब्लॉक B के मुक़ीम इस्लामी भाई अपना वाक़िआ़ कुछ यूं बयान करते हैं : मैं गुनाहों में इस क़दर घिरा हुवा था कि मुझे अपनी ज़िन्दगी के बेश क़ीमत लम्ह़ात के बरबाद होने का एह़सास तक न था, ह़स्बे मा'मूल उस दिन भी मैं होटल में मौजूद था और दूसरे लोगों की त़रह़ चाए के बहाने इन्हिमाक से टी वी पर चलने वाले फ़िल्मी मनाज़िर में खोया हुवा था कि इतने में सब्ज़ सब्ज़ इ़मामे का ताज सजाए सुन्नतों भरे लिबास में मल्बूस एक इस्लामी भाई ह़या से निगाहें झुकाए, बा वक़ार अन्दाज़ में चलते हुवे मेरे क़रीब आए और गर्म जोशी से मुसाफ़ह़ा करने के बा'द कहने लगे : प्यारे भाई बाहर चौक दर्स की तरकीब है। आप चन्द मिनट इनायत फ़रमा दें اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ढेरों नेकियों का ख़ज़ाना हाथ आएगा। मैं उन की ख़ुश अख़्लाक़ी व मिलनसारी से

www.dawateislami.net

मुतअस्सिर हो कर हाथों हाथ उन के साथ चल पड़ा। होटल के बाहर एक इस्लामी भाई फ़ैज़ाने सुन्नत से दर्स दे रहे थे, दूसरे इस्लामी भाइयों की त़रह़ मैं भी दर्स सुनने में मसरूफ़ हो गया, दर्स सुन कर मेरा दिल चोट खा गया, चन्द लम्ह़ों के लिये मैं सोच के गहरे समन्दर में डूब गया और मुझे एह़सास हुवा कि मैं ने अपनी ज़िन्दगी के अनमोल हीरों को यूंही ग़फ़्लत में गंवा दिया, ख़ैर बक़िय्या घड़ियों को ग़नीमत जानते हुवे मैं ने सिद्क़े दिल से तौबा की और इस्लामी भाइयों की सोह़बत इख़्तियार कर ली, जिस की बदौलत कभी सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत की सआ़दत तो कभी मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सफ़र नसीब होने लगा। रफ़्ता रफ़्ता मैं मदनी माह़ोल के क़रीब से क़रीब तर होता चला गया, बिल आख़िर होटलों की ज़ीनत बनने वाला नौजवान चौक दर्स की बरकत से आज اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ आ़शिक़ाने रसूल के साथ मस्जिद में रात बसर करने वाला बन गया।[1]

इसी माह़ोल ने अदना को आ'ला कर दिया देखो

उजाला ही उजाला ही उजाला कर दिया देखो

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

क़बूलिय्यते दुआ का राज़

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : ह़लाल कमाई से इबादात में लज़्ज़त, दिल में बेदारी, आंखों में तरी, दुआ में क़बूलिय्यत पैदा होती है। जो बन्दा मक़्बूलुद्दुआ बनना चाहे वोह **अक्ले ह़लाल और सिद्क़े मक़ाल** (या'नी ग़िज़ा ह़लाल और सच्ची ज़बान) रखे, ह़लाल कमाई वोह जो ह़लाल ज़रीओं से आए। (मिरआतुल मनाजीह़, 7 / 95)

1 .....(रिसाला) मैं ने वीडियो सेन्टर क्यूं बन्द किया, स. 12

www.dawateislami.net

ماخذ ومراجع

کتاب	مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ
قرآن مجید	❁❁❁❁❁❁	احیاء علوم الدین	دار الکتب العلمیۃ بیروت 2008ء
التفسیر الکبیر	دار احیاء التراث العربی بیروت ۱۴۲۹ھ	غیبت کی تباہ کاریاں	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۳۰ھ
صحیح البخاری	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۲۸ھ	تذکرۃ الاولیاء	انتشارات گنجینہ ۱۳۷۹ھ
صحیح مسلم	دار الکتب العلمیۃ بیروت 2008ء	شرح الزرقانی علی المواھب	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۷ھ
سنن الترمذی	دار الکتب العلمیۃ بیروت 2008ء	البدایۃ والنھایۃ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۲۶ھ
سنن ابن ماجۃ	دار الکتب العلمیۃ بیروت 2009ء	تاریخ مدینہ دمشق	دار الفکر بیروت ۱۴۱۵ھ
مسند احمد	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۹ھ	اسد الغابۃ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۹ھ
المعجم الاوسط	دار الفکر عمان ۱۴۲۰ھ	نیکی کی دعوت	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۳۲ھ
مؤطا امام مالک	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۳۳ھ	گلدستہ درود وسلام	// ۱۴۳۵ھ
شعب الایمان	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۹ھ	میں نے ویڈیو سینٹر کیوں بند کیا؟	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
کشف الخفاء	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۲ھ	حدائق بخشش	// ۱۴۳۳ھ
موسوعۃ ابن ابی دنیا	المکتبۃ العصریۃ بیروت ۱۴۲۹ھ	سامان بخشش	شبیر برادرز لاھور ۱۴۳۲ھ
الجامع الصغیر	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۳۳ھ	وسائل بخشش (مرمم)	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۳۶ھ
حلیۃ الاولیاء	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۷ھ	شاہنامہ اسلام مکمل	الحمد پبلی کیشنز 2006ء
مرآۃ المناجیح	نعیمی کتب خانہ گجرات	فیروز اللغات جامع	فیروز سنز لمیٹڈ لاھور 2005ء
بہار شریعت	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۳۵ھ	آن لائن اردو لغت	اردو دائرۂ معارف العلوم
تنبیہ الغافلین	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۳۰ھ		

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस्त

उ़नवान	सफ़्हा	उ़नवान	सफ़्हा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	6-सब्र का सवाब	17
कोहे सफ़ा पर पहली नेकी की दा'वत	1	7-सलाम की सुन्नत को आ़म करने का ज़रीआ़	17
पहला अ़लल ए'लान दर्स	4		
करूं तेरे नाम पे जां फ़िदा	5	8-दा'वते इस्लामी का तआ़रुफ़ व तशहीर	18
इज़्हारे इस्लाम पर तशद्दुद का सामना	8		
राहे ख़ुदा में मुश्किलात पर सब्र	9	9-अमीरे अहले सुन्नत की दुआ़एं लेने का ज़रीआ़	19
चन्द लोगों को जम्अ़ कर के दा'वत देना कैसा ?	9		
बुज़ुर्गाने दीन का अ़मल	11	दर्स के तीन हुरूफ़ की निस्बत से दर्स देने के 3 फ़ज़ाइल	20
चौक दर्स क्या है ?	13	بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ के उन्नीस हुरूफ़ की निस्बत से चौक दर्स देने के ﴿19﴾ मदनी फूल	20
"नेकी की दा'वत" के दस हुरूफ़ की निस्बत से चौक दर्स के ﴿10﴾ फ़वाइद	13		
1-ख़ूब नेकियां बढ़ाने का ज़रीआ़	13	चौक दर्स देने का त़रीक़ा	23
2-नेकियों पर इस्तिक़ामत का ज़रीआ़	14	दर्स के आख़िर में इस त़रह़ तरग़ीब दिलाइये !	23
3-बाज़ार में ज़िक्रुल्लाह का सवाब	15	चौक दर्स की मदनी बहार	26
4-मसाजिद की आबाद कारी का ज़रीआ़	16	होटल की ज़ीनत बनने वाला नौजवान	27
5-मशक़्क़त ज़ियादा तो सवाब भी ज़ियादा	16	माख़ज़ो मराजेअ़	29

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमा 'रात बा 'द नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले दा 'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ❁ सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❁ रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए़ मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा 'मूल बना लीजिये।

मेरा मदनी मक़्सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَاللّٰه عزوجل अपनी इस्लाह़ के लिये "मदनी इन्आ़मात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "मदनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللّٰه عزوجل

ISBN
0133005
MC 1286

मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

❁ देहली :- उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामेअ़ मस्जिद, देहली -6, फ़ोन : 011-23284560
❁ अह़मदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अह़मदाबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200
❁ मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा इस्टेट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997
❁ ह़ैदराबाद :- मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, ह़ैदराबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 2 45 72 786
E- mail : maktabadelhi@gmail.com, Web : www.dawateislami.net

www.dawateislami.net